D.B. College, Jainagar, Madhubani (Bihar)
(Constituent Unit of L.N.M. Univ. Darbhanga, Bihar)
Paper Name - INDIAN PHILOSOPHY
Class - B.A. Part-I, II & Subsi

Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
Department of Philosophy
Lecture No - 07 & 08
Date → Dec. 06th, 2020

Topic दर्शन का अर्थ और इसकी परिभाषा

'दर्शन' का अर्थ पाश्चात्य और भारतीय दोनों दृष्टिकोणों से निरूपित करना आवश्यक है।

पाश्चात्य मत :- पाश्चात्य दर्शन में 'दर्शन' अर्थ 'फिलॉसफी' (Philosophy) है। 'फिलॉसफी' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्दों 'फिलॉस या फाइलो' एवं 'सोफिया' से हुई है। इसका अर्थ है क्रमशः 'ज्ञान' एवं 'प्रेम'। अर्थात् फिलॉसफी का अर्थ होता है ज्ञान का प्रेम या ज्ञान का अन्वेषण (Love of wisdom या Search of wisdom)। इस अर्थ के अनुसार ज्ञान का प्रेमी या सत्य का अनुसंधानकर्ता ही दार्शनिक है।

मनुष्य विवेकशील प्राणी है। वह सतत नूतन विषयों की ज्ञान-प्राप्ति में तल्लीन रहता है। इस आधार पर सभी मनुष्य दार्शनिक कहे जा सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अपना कोई न कोई जीवन दर्शन अवश्य होता है। यह बात दूसरी है कि इनमें कुछ व्यक्ति उच्च कोटि के दार्शनिक हैं, तो कुछ अन्य निम्न कोटि के हैं।

आदिकाल से मनुष्य कई मौलिक प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए प्रयत्नशील रहा है। ये मौलिक प्रश्न हैं— मनुष्य क्या है?, आत्मा क्या है?, विश्व क्या है?, इसकी उत्पत्ति क्यों और कैसे हुई है? क्या विश्व प्रयोजनपूर्ण है या प्रयोजनहीन है? ईश्वर क्या है? इसका स्वरूप कैसा है? इसके अस्तित्व के लिए क्या प्रमाण है? यथार्थ ज्ञान क्या है? इसके साधन क्या हैं? शुभ और अशुभ, उचित और अनुचित क्या है? व्यक्ति और समाज में क्या संबंध है? इन प्रश्नों का सही समाधान ढूंढना ही दर्शन का मुख्य लक्ष्य है।

Scanned with CamScanner

दर्शन की कई परिभाषाएँ दी जाती हैं। विलियम जेम्स के शब्दों में "दर्शनशास्त्र स्पष्ट रूप से विचार करने का असाधारण रूप से आग्रहपूर्ण प्रयत्न है।" बी० रसेल के अनुसार, "दर्शन की उत्पत्ति सत्य की खोज के लिए किए गए असाधारण रूप से आग्रहपूर्ण प्रयत्न से होती है।" वास्तव में दर्शन को परिभाषा में बाँधा परिभाषा में आबद्ध नहीं किया जा सकता। अधिक-से अधिक इसकी व्याख्या दी जा सकती है। हम ऐसा कह सकते हैं कि "अनवरत तथा प्रयत्नशील चिंतन के आधार पर विश्व की समस्त अनुभूतियों की बौद्धिक व्याख्या तथा उनके मूल्यांकन के प्रयास को ही दर्शन की संज्ञा दी जा सकती है।" इस व्याख्यात्मक परिभाषा का विश्लेषण करने पर दार्शनिक चिंतन में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं:-

(A) दर्शन विश्व को इसकी पूर्णता (The world as a whole) में समझने का प्रयास करता है:- विज्ञान विश्व का अध्ययन इसे खंडों में विभाजित करके करता है, किन्तु दर्शन विश्व को इसकी समग्रता या संपूर्णता में लेकर इसका अध्ययन करता है। जहाँ विज्ञान की पद्धति विश्लेषणात्मक (analytic) है वहीं दर्शन की विधि संश्लेषणात्मक है।

(B) दार्शनिक चिंतन बौद्धिक (rational) है:- दर्शन बौद्धिक युक्ति, तर्क-वितर्क एवं ठोस प्रमाणों पर आधारित है। यहाँ भावनाओं, संवेगों एवं विश्वास से काम नहीं चलता। इस प्रकार दर्शन धर्म से भिन्न बन जाता है।

Scanned with CamScanner

(c) दार्शनिक चिंतन निष्पक्ष (impartial) होता है :- दार्शनिक विश्व का अध्ययन करते समय अपने स्वार्थ-भाव, राग-द्वेष एवं पक्षपातपूर्ण भावनाओं से जरा भी प्रभावित नहीं होता। अतः दार्शनिक चिंतन आत्मनिष्ठ न होकर वस्तुनिष्ठ बन जाता है।

(d) दार्शनिक चिंतन का व्यावहारिक उद्देश्य (Practical aim) रहता है :- मानव जीवन को सुखी बनाना ही दार्शनिक चिंतन का प्रमुख लक्ष्य है। ऐसा तभी संभव है जब जीवन और जगत् का सही अर्थ समझा जाए। अतः यहाँ दर्शन की उपयोगिता सराहनीय है।

Scanned with CamScanner